Read India
An Imprint of Pratham Books

हम सब प्राणी

माधव चव्हाण
मीरा तेंडोलकर

Original Story (Marathi) Aamhi Saare Prani
by Madhav Chavan and Meera Tendolkar
© Pratham Books 2004
Fourth Hindi Edition: 2008

Illustrations: Santosh Pujari
Hindi Translation: Pratham Books Team

ISBN: 81-8263-065-7

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th 'C' Main, 6th 'B' Cross,
OMBR Layout, Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526,
New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Trimiti Services

Printed by: Manipal Press, Manipal

Published by PRATHAM BOOKS
www.prathambooks.org

The development of this book was sponsored by
Dubai Creek Round Table, Dubai, U.A.E.

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

हम सब प्राणी

लेखन-संकल्पना
माधव चव्हाण
मीरा तेंडोलकर
चित्रांकन
संतोष पुजारी
हिंदी अनुवाद
प्रथम पुस्तक समूह

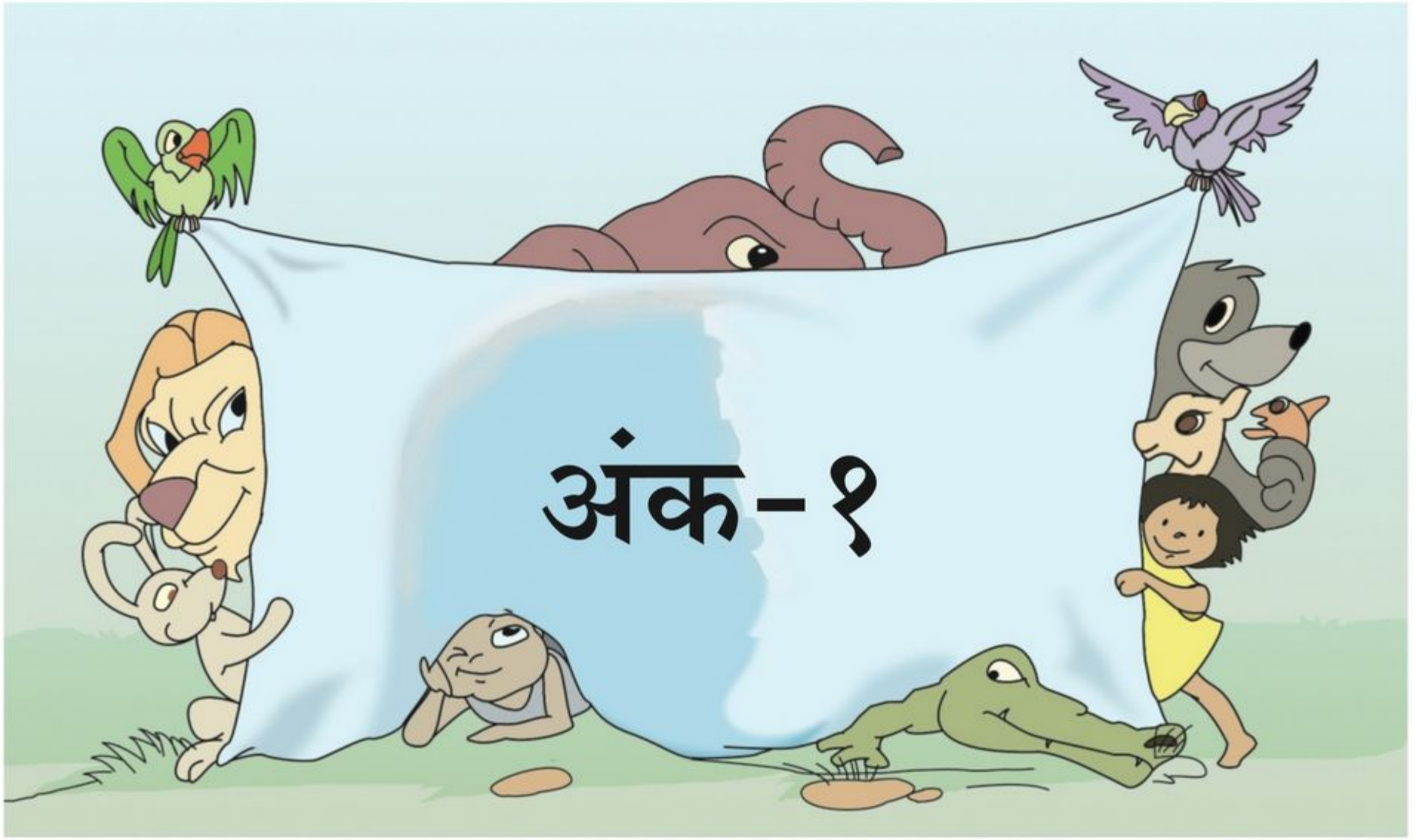
अंक-१

सुनो, सुनो
मेरी बात सुनो ।

मैं आँखों से देख सकती हूँ।
यह बात मैं जानती हूँ।

हमारे पास भी आँखें हैं।

हमारी आँखें दूर-दूर तक देख सकती हैं। जानती हो?

मैं नाक से साँस लेती हूँ।
क्या तुम जानते हो?

हमारे पास भी नाक हैं!

हम नाक से सूँघकर ही तुम्हें पहचान लेते हैं।

मैं दाँतों से खाना खाती हूँ। मैं दातों से चबा भी सकती हूँ।
यह बात मैं अच्छी तरह जानती हूँ।

देखो, हमारे दाँत देखो!

काटकर दिखाएँ या खाकर दिखाएँ? हा, हा, हीः, हीः!

मैं कान से सुन सकती हूँ।
यह मैं पहले से जानती हूँ।

हम एकदम धीमी आवाज़ भी सुन लेते हैं।
ए ए ऽ ऽ ऽ ऽ सुना तुमने?

मैं अपने पैरों से चलती हूँ, कूदती हूँ, दौड़ती हूँ
और नाचती भी हूँ।

क्या तुम हमारे साथ दौड़ लगाओगी?
क्या तुम हमारी तरह इठलाकर चल सकती हो?

देखो, मैं अपने बालों की चोटी बना सकती हूँ।
तुम तो चोटी बना ही नहीं सकते!

हमें तो खुले बाल ही पसंद हैं।
वैसे, चोटी हम भी बना सकते हैं।

मैं हाथों से काम करती हूँ।
ताली बजाती हूँ, लिखती हूँ, और लटकती भी हूँ।

अब और बातें नहीं!!

मुँह पर उँगली रखो।

अंक - २

नहीं, मैं जो जानती हूँ,
कहकर ही रहूँगी।

अच्छा ! हमारे नाखून देखे हैं?
कितने पैने हैं!

छि: नाखून का मैल पेट में जाता है।
इसीलिए, नाखून काटते हैं। समझे?

देखो हमारी दुम देखो।
कितनी सुंदर है।

हम मनुष्यों ने दुम बहुत पहले छोड़ दी।
नहीं तो चड्डी कैसे पहनते!

हमारी दहाड़ सुनी है?

तुम डर जाओगी और रो पड़ोगी।

किस को डराते हो? मेरी माँ की
डाँट सुनोगे तो भाग जाओगे!

आखिर तुम तो ठहरे सिर्फ़ प्राणी! मैं जानती हूँ।

मनुष्य भी प्राणी है।
हम भी तो यह बात जानते हैं!

हाँ, ठीक कहते हो।

यह रहा एक प्राणी। माँ इसे जंगली कहती हैं!

हाँ, यह प्राणी, तुम प्राणी
हम सब प्राणी!!

मनुष्य अपने आपको बहुत महान समझता है । उसका नमूना कहानी की छोटी सी लड़की में दिखाई देता है । इस किताब में बहुत ही सुन्दरता से प्राणी उसका भ्रम दूर करते हैं ।

बच्चों के लिए हमारे और प्रकाशन

उड़ते उड़ते	हवा
पेड़	

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंगेजी, हिन्दी, तमिल, तेलुगू, कन्नड, मराठी, गुजराती, बाँग्ला, पंजाबी, उर्दू व ओड़िया भाषाओं में उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने वाली गैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 81-8263-065-7
9 788182 630659

Age Group : 7-10 years

Hum Sab Prani (Hindi)

MRP Rs. 15.00